International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समग्र दृष्टिकोण और शैक्षणिक नींव (एनईपी–2020)

सुभिता कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. रीटा झाझड़िया
ऐसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश –

शिक्षण एक बहुत ही महान व्यवसाय है जो व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य को आकार देता है – ए.पी.जे. कला शिक्षा समाज की एक आत्मा की भांति है। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती है – जी.के. चेस्टर्टन

इन वाक्यों से हमें मालूम होता है। कि शिक्षा हमारे जीवन में कितनी अनमोल है। इससे राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि मानव संसाधनों के विकास भी निर्भर करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सरकार द्वारा महत्त्वपूर्ण बदलाव एवं चमत्कारी परिवर्तन किये गये है। लेकिन इसे एक व्यवहारिक रूप प्रदान किया जाए ताकि देश को विश्व के समक्ष आदर्श शिक्षा मंडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सके ताकि एक श्रेष्ठतर समाज की रचना की जा सके जिससे एक श्रेष्ठ विश्व की रचना हो सके शिक्षा एक सफल, शिक्षित और सम्पन्न समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण नींव है। यह हमारे समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तावना –

शिक्षा शब्द को देखे तो पता चलता है कि शिक्षा एक संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ है। सीखना या सीख होता है। जबकि अंग्रेजी भाषा में शिक्षा को ''एजुकेशन'' कहते है। शिक्षा का सही अर्थों में मतलब सीखना होता है। वह सीख चाहे वह आप अपने माता–पिता से सीखते है। या फिर समाज से या स्कूल तथा कॉलेज या अपने दोस्तों से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जहां कहीं से भी हमें सीखना होता है। वह शिक्षा कहलाती है। शिक्षा से हमें ज्ञान, उचित आचरण तकनीकि दक्षता विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते है। इसमें आचरण, तकनीकि दक्षता तथा ज्ञान का समाविष्ट होता है। इसी प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानवीय नैतिक और सौन्दर्य विषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है।

ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में विश्व बहुत बड़े – बड़े परिवर्तनों से गुजर रहा जिसमें नई–नई तकनीकि अपनी जगह बना रही है। जिसके डेटा संग्रहण तकनीकि, ब्लॉक चैन सिस्टम मशीन लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनी जग बना रही है। अर्थात् जो अकुशल कामगार की जगह मशीन ले लेगी वर्तमान विश्व में व्यक्ति को कुशल एवम कौशल की आवश्यकता है इसी वैश्विक परिस्थिति के अनुसार बच्चों को यह ध्यान देने की आवश्यकता है। कि इन्हें जो जो सिखाया जा रहा है। वह तो सीखे ही और साथ में सतत् सीखते रहने का भी गुण भी विकसित करे।

भारत के पास अगला दशक विश्व गुरू बनने का सुनहरा अवसर प्रदान कर सकता है क्योंकि विश्व में सर्वाधिक युवा जनसंख्या भारत में निवास करती है। युवा जनसंख्या का अभिप्राय कार्य क्षमता अधिक तथा सीखने तथा जानने की अत्यधिक तीव्र प्रवृत्ति शिक्षा के क्षेत्र में भारत प्रयासरत रहा है। आजादी से पहले तथा आजादी के पश्चात् कई कमिटि तथा समितियां बना चुका है। लेकिन शिक्षा के लिए पहली नीति
1968 में इन्द्रा गांधी सरकार के समय लायी तथा द्वितीय शिक्षा नीति 1986 में लागू की गई थी और तीसरी शिक्षा नीति जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 का नाम दिया गया जिसकी अध्यक्षता कस्तूरीरंगन की जिसमें इन्होंने NEP - 2020 का लक्ष्य 2040 तक एक कुशल शिक्षा प्रणाली बनाना है। जिसमें सभी शिक्षार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुंच हो। यह अपने देश की पहली नीति है जिसमें देश के परम्परागत एवं सांस्कृतिक महत्त्व को शामिल करते हुये सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना शामिल होगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पिछली नीति तथा उसका आधार –

भारत सरकार ने पिछली नीतियां तथा कई समितियां को आधार बनाते हुये कार्य किया जिसमें अब तक सरकार ने तीन शिक्षा नीतियों का योगदान रहा है। जिसमें 1968 इन्द्रागांधी सरकार के समय प्रथ नीति तथा 1986 में राजीव गांधी सरकार के समय द्वितीय शिक्षा नीति एवमं वर्तमान में कई समितियों को आधार बनाया गया है। जिसमें

19982 (1986 का संशोधित) अधूरे काम को इस नीति के द्वारा पूरा करने का प्रयास किया गया। जिसमें प्राथमिक शिक्षा को आसान एवं वैधानिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया गया जिसके परिणामस्वरूप 86 वां संविधान संशोधन 2002 को एक संवैधानिक स्थान प्रदान किया गया जो संविधान में अनुच्छेद 21 A के तहत मौलिक अधिकारों के तहत संरक्षण प्रदान किया गया और उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार सिद्धान्त –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे सुखपूर्वक एवं सन्तुलित जीवन बिताने के लिए शिक्षा का सहारा लेना पड़ता है। जिससे अच्छे इंसानों का विकास हो सके तथा जिनके विचार तर्कसंगत हो जो अधिकांश कार्य करने में सहायक हो उस मनुष्य में करूणा दया भाव विचारों में लचीलापन तथा नैतिक मूल्य, रचनात्मक शक्ति जो सभी कार्य अपने संवैधानिक अनुस्थ कर सके ये सब कुछ हासिल करना प्रत्येक शिक्षण संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए जिससे मनुष्यों में परस्पर संवाद बना रहे।

मूलभूत सिद्धान्त जो व्यक्ति एवं संस्था दोनों को दिशानिर्देशित कर सकते हैं।

- चरित्र निर्माण एवं विकास का उद्देश्य – स्पेन्सर ने लिखा ''मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता चरित्र है, शिक्षा नहीं'' सामाजिक अथवा धार्मिक जीवन में व्यक्ति का चरित्रवान होना आवश्यक है। एक अंग्रेजी विद्धान ने कहा है। कि यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ खो दिया।
- प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति और उनके विकास हेतु प्रयास करना– अभिभावकों शिक्षकों तथा समाज को छात्र एवं छात्राओं की विशिष्ट क्षमताओं का सर्वांगीण विकास करने पर अत्यधिक जोर दिया जाना चाहिए।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- बुनियादी या आधार साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना – इससे व्यक्ति को संज्ञानात्मक कौशल सीखने में आसानी हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति को कक्षा 3 तक का तथा आधारभूत ज्ञान लेने में आसानी हो सकता है।
- लचीलापन – शिक्षा में लचीलापन होना चाहिए छात्र एवं छात्राओं को अपनी प्रतिभा के अनुसार बदलाव का अवसर या मौका प्राप्त होता रहे।
- अवधारणात्मक समझ पर जोर – रटने की पद्धति नहीं और ना ही परीक्षा के बल्कि भविष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा पर जोर।
- रचनात्मक और तार्किक सोच – निर्णय लेने में तार्किकता हो तथा नवाचार को प्रोत्साहन दिया जाये।
- तकनीकि के उपयोग पर जोर – जो भाषा सम्बन्धी समस्याऐं है उनको दूर करना एवम दिव्यांग बच्चों को ब्रेल लिपी या इससे अच्छे उपयोग में मदद करना।
- कौशल विकास पर अत्यधिक जोर दिया गया जिससे व्यक्तियों के आपसी संवाद सहयोग सामूहिक कार्य एवं लचीलेपन को बढ़ावा मिले।
- शैक्षणिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण पर अत्यधिक बल दिया गया जिससे स्वायत्ता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और आउट ऑफ द बॉक्स विचारों को प्रोत्साहित किया जा सके।
- भारतीय जड़ों तथा परम्परागत एवं सांस्कृतिक जड़ों को भी समेटते हुये नई शिक्षा नीति का विकास करना क्योंकि भारत की जो पारम्परिक एवं सांस्कृतिक इतिहास गौरवशाली है। जो आधुनिक संस्कृति में जुड़ने के बाद इस शिक्षा नीति को अधिक प्रासंगिक बनाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विजन – 2020

इस नीति के अनुसार शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना एवं भारतीय मूल्यों से युक्त शिक्षा नीति अर्थात् प्रणाली का विकास करना है। जिससे भारत को वैश्विक ज्ञान से समृद्ध किया जा सके ऐसे विषय पाठ्यक्रम में जोड़ा जाये जिससे बदले परिप्रेक्ष्य में नागरिकों की भूमिका बढ़े एवं उनके व्यवहार एवं आचरण में बदलाव आ सके जिससे मनुष्यों के स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो सके।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 06 June- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्कूल शिक्षा –

जो पहले 10+2 जिसमें 3 से 18 वर्षीय पाठ्यक्रम शामिल था जिसे वर्तमान बदलकर 5+3+3+4 के सांचे में ढाला जायेगा तथा 3 वर्ष के बच्चों को बुनियादी सुविधा तथा देखभाल के लिये आधारभूत ढांचार प्रदान किया जायेगा –

- प्रथम बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को जानने तथा सीखने की नींव डाली जायेगी जिससे बच्चों के मस्तिष्क के साथ–साथ शारीरिक विकास भी हो सके।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान : सीखने के लिए तात्कालिक आवश्यकता एवं व्यक्ति जीवनभर कुछ सीखने की आदत में ढालने का प्रयास किया जायेगा।
- ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या कम करना और सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना इत्यादि।
- उच्च शिक्षा, बच्चों, दिव्यांगजनों एवं असाह एवम् गरीब बच्चों के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कई प्रावधान किये गये है जिससे भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुधारा जा सके जो कि देश के भविष्य निर्माण में साथ निभा सके।

संदर्भ सूची –

- शिक्षा नीति – 2020 (कुछ संस्तुतियां एवं विमर्श) डॉ. सुधांश पाण्डेय
- नई शिक्षा नीति 2020 और मेरे विचार जितेन्द्र यादव
- शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन – साहित्य पब्लिकेशन
- नेशनल ऐजूकेशन पॉलिसी 2020 द की टू डेवलप इन इण्डिया – डॉ. केशव चन्द्र मण्डल
- भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 – डॉ. महात्मा एवं डॉ. चेतना पोख (एक क्रांतिकारी पहल)